



बोनसाई उत्पादन-युवाओं के लिए उभरता व्यवसाय

¹मीनू कुमारी, ¹परमवीर सिंह, ²ललिता राणा और ³श्वेता कुमारी

बोनसाई मुख्यतः काष्ठीय पौधों को उनके वास्तविक रूप से छोटा बनाकर छोटे गमलों या पात्रों में उगाने की कला है। इस शैली का उद्गम लगभग 2000 वर्ष पूर्व चीन में हुआ था, लेकिन इसकी वैश्विक लोकप्रियता जापान में बढ़ी। शब्द “बोनसाई” जापानी भाषा से लिया गया है, जिसमें “बोन” का अर्थ है ट्रे और “साई” का अर्थ है पौधा। शाब्दिक अर्थ है “पौधा ट्रे में उगाया गया।” बोनसाई तैयार करते समय वृक्षों को विशेष तकनीकों द्वारा छोटा आकार दिया जाता है, ताकि पौधे के सभी गुण सुरक्षित रहें। यह प्रकृति की सुंदरता का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करता है और बड़े वृक्षों व पौधों को सीमित जगह में प्राकृतिक रूप में प्रदर्शित करने का अवसर देता है। वर्तमान समय में बोनसाई रखने का प्रचलन तीव्र गति से बढ़ रहा है। छोटे-छोटे गमलों में तैयार बोनसाई विशेष रूप से लोकप्रिय हो रहे हैं, क्योंकि ये प्राकृतिक दृश्य को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। बोनसाई के माध्यम से बड़े वृक्षों और पौधों को उनके प्राकृतिक स्वरूप में सीमित स्थान में उगाया जा सकता है, जो शहरी परिवेश के लिए अत्यंत उपयुक्त है। बोनसाई उत्पादन एक लाभकारी और रचनात्मक व्यवसाय है, जो युवाओं के लिए रोजगार सृजन, कला कौशल विकास और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

बोनसाई अपने विशिष्ट रूप और जटिल संरचना के कारण संघर्ष, संतुलन और सौंदर्य का भाव प्रकट करता है तथा एक अनूठी कलात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है। समूह में लगाए गए बोनसाई प्राकृतिक वातावरण का आभास करवाते हैं।

बोनसाई पौधों को तैयार करना अपने आप में धैर्य, अनुशासन और कलात्मक कौशल का प्रतीक है। इसके निर्माण में तकनीकी ज्ञान और अनुभव की आवश्यकता होती है, साथ ही यह पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बोनसाई कला को समृद्ध करने वाले व्यक्ति साबुरो काटो के योगदान के सम्मान

¹उद्यान पुष्प एवं भूदृश्य विभाग, बिहार कृषि महाविद्यालय, सबौर, ²राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, ³बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके



खुली जड़ वाला बोनसाई

में प्रतिवर्ष 14 मई को विश्व बोनसाई दिवस मनाया जाता है। जापानी संस्कृति में बोनसाई सद्भाव और संतुलन का प्रतीक माना जाता है, जिसमें छोटे और नियंत्रित वातावरण में प्रकृति की अद्भुत सुंदरता को साकार किया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बोनसाई को शांति, सम्मान और मित्रता के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है, इसलिए इसे कई देशों में उपहार स्वरूप भी प्रदान किया जाता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बोनसाई निर्माण न केवल एक विशिष्ट और कौशलपूर्ण कला है, बल्कि यह रोजगार सृजन का एक प्रभावी और आकर्षक माध्यम भी बनता जा रहा है। वास्तव में, बोनसाई विज्ञान, कला, कल्पना और प्रकृति का संतुलित एवं विकासशील संगम है।

गमले का चयन

बोनसाई के लिए गमले विभिन्न आकारों में उपयोग किए जाते हैं—आयताकार, वर्गाकार, गोलाकार, अंडाकार या षट्कोणीय।

- गमले में मिट्टी कम होने पर पौधों को पर्याप्त पोषण नहीं मिलता और उनकी लंबाई व आकार में वृद्धि सीमित होती है।
- जल निकास के लिए गमले में 3-4 छेद होना आवश्यक है।
- गमले का रंग पौधों को सुशोभित करे, भड़कीला न हो।
- आजकल चीनी मिट्टी के गहरे और हल्के गमले (2-15 सें.मी. गहराई, 40 सें.मी. चौड़ाई तक) भी उपयोग में हैं।
- गर्म और आर्द्र जलवायु वाले क्षेत्रों में मिट्टी के गमले अधिक उपयुक्त हैं।



आकर्षक बोनसाई

बोनसाई की शैलियाँ

बोनसाई कला विभिन्न शैलियों पर आधारित होती है। इसे नर्सरी या घर के बगीचे में तैयार किया जा सकता है, जहाँ पर्याप्त धूप और छाया हो। बोनसाई संघ के अनुसार शैली का निर्धारण मुख्य तने की आकृति और एक ही पात्र में उगाए गए वृक्षों की संख्या के आधार पर किया जाता है। प्रमुख शैलियाँ इस प्रकार हैं:

सीधा बोनसाई/चौकन शैली

इस शैली के बोनसाई सामान्य और

संतुलित होते हैं। इसमें मुख्य तना सीधा होता है तथा शीर्ष की ओर क्रमशः पतला होता जाता है। द्वितीयक शाखाएँ मुख्य तने से लगभग 90 डिग्री के कोण पर निकलती हैं, जबकि तृतीयक शाखाओं को विकसित नहीं होने दिया जाता। परिणामस्वरूप इस प्रकार के बोनसाई सूक्ष्म वृक्ष के समान प्रतीत होते हैं।

तिरछा बोनसाई

इस शैली में मुख्य तने को पात्र से लगभग 45 डिग्री के कोण पर झुकाया जाता है, जिससे वृक्ष झुका हुआ प्रतीत होता है। इसमें झुके हुए मुख्य तने से भूमि के समानांतर द्वितीयक शाखाओं को विकसित होने दिया जाता है।

कैस्केड बोनसाई

इस शैली में मुख्य तने को इस प्रकार झुकाया जाता है कि वृक्ष अधोमुखी दिखाई

लिटराती शैली

इस शैली में मुख्य शाखा को लगभग 60 डिग्री के कोण पर झुकाया जाता है तथा द्वितीयक शाखाओं को एक ही दिशा में विकसित होने दिया जाता है। वृक्ष की वृद्धि मुख्यतः शीर्ष भाग में रखी जाती है और नीचे की शाखाओं को काट-छाँट कर हटा दिया जाता है, जिससे वृक्ष का स्वरूप कलात्मक और आकर्षक बना रहता है।

दे। तने को केवल 60 से 90 सेंटीमीटर तक बढ़ने दिया जाता है, जिससे वह पात्र की निचली सतह से भी नीचे पहुँच जाता है। यह शैली पर्वतीय क्षेत्रों में चट्टानों के किनारे लटके वृक्षों से प्रेरित होती है।

चट्टानी बोनसाई

इस शैली में गमले की मिट्टी की सतह पर पत्थर या चट्टान के टुकड़े रखे जाते हैं, जिनमें वृक्ष की जड़ें फैलती हैं। चट्टानों को जड़ों के पास इस प्रकार रखा जाता है कि वृक्ष मानो चट्टान से ही उग रहा हो। यह शैली वृक्ष की आयु और प्रबलता का प्रतीक मानी जाती है।

राफ्ट अथवा इकाडाबुकी शैली

इस शैली में मुख्य तने को क्षैतिज रूप से पात्र में लगाया जाता है। इससे 2-3 स्थानों से ऊर्ध्वाधर शाखाएँ निकलती हैं, जो आगे चलकर एकल छतरी का रूप ले लेती हैं। मुख्य तने से नई जड़ें विकसित होती हैं, जो शाखाओं को पोषक तत्व प्रदान करती हैं। यह शैली प्रकृति में हवा और तूफान से क्षतिग्रस्त वृक्षों से प्रेरित होती है।

विण्ड स्वीप्ट शैली

यह शैली लगातार तेज हवाओं से

वृक्षों का चयन

बोनसाई निर्माण के लिए वृक्षों का चयन उनके उगने वाली जलवायु के अनुसार किया जाना चाहिए, जैसे उष्णकटिबंधीय या शीतोष्ण जलवायु के पौधे। चयन करते समय पत्तियों का आकार, रंग-रूप, फूलों और फलों की सुंदरता, उनके निकलने का समय तथा पुष्पण अवधि पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। कुछ वृक्ष ऐसे भी चयनित किए जाते हैं, जिनका स्वरूप पत्तियाँ गिरने के बाद और अधिक आकर्षक हो जाता है। सामान्यतः बोनसाई के लिए दीर्घायु वृक्षों का चयन किया जाता है। छोटे पत्तों वाले वृक्षों से तैयार बोनसाई अधिक सुंदर और संतुलित प्रतीत होते हैं। हालांकि बड़े पत्तों वाले वृक्ष, जैसे बरगद और पीपल, भी उचित तकनीकों द्वारा सफलतापूर्वक बोनसाई के रूप में विकसित किए जा सकते हैं।

सदाबहार वृक्ष

नीम, आवला, केजुरिना, केंसिया, सेमल, पंगारा, गूलर, बरगद, फाइकस प्रजातियाँ, जेड प्लांट, प्राइड ऑफ इंडिया, आम, अमरूद, जामुन, गुलमोहर, पीपल, नीबू आदि प्रमुख सदाबहार वृक्ष हैं।

पतझड़ी वृक्ष

अनार, बेर, बोगनविलिया, फर, फलदार प्लम, मेलस, नाशपाती, बर्च, मेपल, बुडेलिया, देवदार आदि पतझड़ी वृक्षों में शामिल हैं।

प्रभावित वृक्षों को दर्शाती है, जिससे उनमें झुकाव और गतिशीलता दिखाई देती है। इसमें पौधे भूमि की सतह से लगभग 90 डिग्री के कोण पर बढ़ते हैं और मुख्य तने से निकलने वाली शाखाओं को एक ही दिशा में विकसित होने दिया जाता है। इस शैली में एक से अधिक मुख्य तने भी हो सकते हैं। यह शैली प्रकृति की प्रबलता को दर्शाती है।

वृक्ष समूह शैली

इस शैली में एक ही गमले में कई वृक्ष लगाए जाते हैं। सबसे बड़ा वृक्ष मध्य में तथा छोटे वृक्ष उसके चारों ओर लगाए जाते हैं, जिससे यह वन्य भूदृश्य जैसा प्रतीत होता है। यह शैली प्राकृतिक वन वातावरण से प्रेरित होती है।

सिनुअस राफ्ट शैली

इस शैली में एक ही वृक्ष से भूमि की सतह के पास कई तनों की वृद्धि करवाई जाती है। यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई वृक्ष गिर गया हो और उससे कई शाखाएँ विकसित हो रही हों।

खुली जड़ वाले वृक्ष

इस शैली में वृक्ष की जड़ें गमले की सतह के ऊपर स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जिससे प्राकृतिक, सुंदर और आकर्षक रूप प्राप्त होता है। इस विधि में पौधा लगाते समय जड़ों को मिट्टी की सतह के ऊपर खुला रखा जाता है और उनके चारों ओर बालू भर दी जाती है।



बोनसाई की वृक्ष समूह शैली

पोषण प्रबंधन एवं सिंचाई

बोनसाई पौधों को अधिक खाद और पानी की आवश्यकता नहीं होती, परंतु इनका संतुलित उपयोग अत्यंत आवश्यक है। मई-जून में प्रतिदिन एक बार तथा सर्दियों में एक या दो दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। सभी आवश्यक पोषक तत्व सीमित मात्रा में जैविक रूप में दिए जाने चाहिए। खाद देने के लिए मई-जून का समय उपयुक्त होता है, क्योंकि इस अवधि में शाखाएँ कठोर हो चुकी होती हैं। बोनसाई पौधे अत्यधिक ठंड या गर्मी सहन नहीं कर पाते, इसलिए उनसे संरक्षण आवश्यक है। गमले में नमी बनाए रखने के लिए मॉस घास का प्रयोग किया जा सकता है। यथासंभव गमलों को खुले और ऊँचे स्थान पर रखें, जहाँ पर्याप्त धूप और जल की व्यवस्था हो।

बोनसाई निर्माण की विधि

बोनसाई निर्माण के लिए बीज अथवा कलमी पौधों को छिछले गमलों में लगाया जाता है। कलमी पौधों से बोनसाई तैयार करने में अपेक्षाकृत कम समय लगता है। इसके लिए नर्सरी से 2 से 10 वर्ष आयु के कलमी पौधे लिए जा सकते हैं, जिनका मुख्य तना कुछ हद तक लचीला हो। चयनित पौधों की इच्छित शैली के अनुसार काट-छाँट कर पूर्व निर्धारित आकार दिया जाता है तथा तारों की सहायता से तने और शाखाओं को बाँधकर मोड़ा जाता है। इसके साथ ही जड़ों की भी आवश्यकतानुसार छाँटाई की जाती है। बोनसाई निर्माण का कार्य फरवरी अथवा जुलाई-अगस्त के महीनों में करना उपयुक्त रहता है, जिससे पौधों को वातावरण से पर्याप्त नमी मिलती रहती है।

पौधों की देखरेख

काट-छाँट

काट-छाँट की प्रक्रिया सामान्यतः गर्मी प्रारंभ होने के साथ की जाती है, जबकि सदाबहार वृक्षों में यह कार्य सर्दी शुरू होने से कुछ समय पहले किया जाता है। ठंडी जलवायु के पौधों जैसे मालपिजिया, देवदार, केजुरिना, साइप्रस और मैलस में कटाई-छाँटाई एवं गमला बदलने का कार्य नवंबर-दिसंबर में करना चाहिए।

नए गमले के लिए मिट्टी, रेत और जैविक खाद को 1:1:1 के अनुपात में मिलाकर मृदा मिश्रण तैयार किया जाता है। गमले में जल निकास की उचित व्यवस्था अनिवार्य होती है। पौधे को पुराने गमले से मिट्टी सहित निकालकर अत्यधिक बढ़ी हुई तथा मुख्य जड़ों की छाँटाई की जाती है। कम आयु के पौधों में गहरी और अधिक आयु के पौधों में हल्की कटाई-छाँटाई करनी चाहिए।

गमले की तली में टूटे हुए गमले के टुकड़ों की पतली परत बिछाकर उसके ऊपर रेत या कोयले की परत डाली जाती है। इसके बाद मृदा मिश्रण भरकर पौधे का रोपण किया जाता है। रोपण के तुरंत बाद सिंचाई की जाती है और पौधे को निश्चित दिशा में स्थिर किया जाता है। स्थानांतरण के पश्चात पौधों को 2 दिनों तक छाया में रखना चाहिए।

पौधों को आकार देना

कटाई-छाँटाई के माध्यम से पौधों को वांछित आकार दिया जाता है। पतली और कोमल शाखाओं को एल्युमिनियम तारों की सहायता से निश्चित दिशा में मोड़ा जाता है। शाखाओं को नीचे की ओर झुकाने के लिए आवश्यकतानुसार भार भी लगाया जाता है। छाँटाई मुख्यतः शीर्ष कलियों में की जाती है। प्रारंभिक अवस्था में पौधों को सुतली या तार से बाँधना आवश्यक होता है, परंतु गाँठ हल्की

सिफारिशें

- बोनसाई बनाने से पूर्व बाग-बगीचों में वृक्षों की प्राकृतिक आकृति का अवलोकन करें। इससे बोनसाई को सही और संतुलित आकार देने में सहायता मिलती है।
- बोनसाई पौधों को समय-समय पर उचित मात्रा में खादयुक्त पानी और पर्याप्त धूप देते रहें, ताकि उनका विकास संतुलित रूप से नियंत्रित बना रहे।
- बोनसाई पौधों का गमला प्रत्येक 2-3 वर्ष में बदलना चाहिए, जिससे जड़ों को पर्याप्त स्थान और पोषण मिल सके।
- पौधों को वांछित आकार बनाए रखने के लिए नियमित अंतराल पर काट-छाँट करते रहना आवश्यक है।

होनी चाहिए, जिससे तने पर दाग न पड़ें।

गमला बदलना

गमला बदलने की आवश्यकता पौधे की किस्म और आयु पर निर्भर करती है। शुष्क जलवायु में सामान्यतः 4-5 वर्ष बाद गमला बदलना लाभदायक होता है, जबकि तीव्र गति से बढ़ने वाले वृक्षों में प्रतिवर्ष गमला बदलना आवश्यक होता है। गमले का चयन पौधे के आकार और उसकी शैली के अनुरूप किया जाना चाहिए।

बोनसाई पौधों को विभिन्न शैलियों के अनुरूप आकार देना एक रचनात्मक और चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। वृक्ष के प्राकृतिक स्वरूप को ध्यान में रखते हुए शाखाओं की कटाई-छँटाई की जाती है। जो शाखाएँ अप्राकृतिक या असंतुलित प्रतीत होती हैं, उन्हें हटा देना चाहिए। पौधों को मोड़ने और वांछित आकार देने के लिए तारों का प्रयोग किया जाता है।



सजावटी पौध उत्पादन का नया आयाम



अनुपम छटा बिखेरता बोनसाई

बोनसाई वृक्ष बीज तथा कलमी पौधों दोनों से तैयार किए जा सकते हैं, लेकिन बीज से बोनसाई बनने में अधिक समय लगता है। इसलिए सामान्यतः 1-2 वर्ष आयु के कलमी पौधों का चयन किया जाता है, जिनका मुख्य तना लचीला हो। चयनित पौधे की हल्की कटाई-छँटाई कर एल्युमिनियम तार की सहायता से मुख्य तने को बाँधकर इच्छित आकार दिया जाता है।

जब पौधा निर्धारित आकार ग्रहण कर ले, तब उसे सावधानीपूर्वक मिट्टी सहित निकालकर मुख्य जड़ों की छँटाई की जाती है और पुनः छिछले गमले में रोपित किया जाता है। गमले में पहले मिट्टी भरकर 2-3 इंच मोटी परत बनाई जाती है, इसके बाद पौधे को रखकर जड़ों के चारों ओर मिट्टी फैलाकर हल्के हाथ से दबाया जाता है। अंत में मिट्टी की सतह पर बजरी या कंकरी बिछाई जाती है, जिससे गमला साफ और आकर्षक दिखाई देता है।

आय के साधन

बोनसाई वृक्ष सुंदरता, साहस, सद्भाव, शांति और धैर्य जैसे गुणों को व्यक्त करते हैं। ये प्रकृति और कला के मध्य एक आदर्श

संतुलन स्थापित करते हैं। वर्तमान समय में बोनसाई बनाने की कला केवल शौक तक सीमित न रहकर एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में उभर चुकी है। अनेक युवा एवं उद्यमी इसे पूर्णतः व्यावसायिक गतिविधि के रूप में अपना रहे हैं।

बोनसाई पौधों का मूल्य उनकी आयु, आकार, प्रजाति और कलात्मकता के अनुसार लगभग 500 रुपये से लेकर लाखों रुपये तक हो सकता है। बोनसाई उत्पादन का कार्य सीमित स्थान में भी किया जा सकता है, जिससे यह शहरी क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त व्यवसाय बन जाता है। बोनसाई विधि से तैयार पौधे शहरीकरण के परिवेश में हरियाली बढ़ाने का एक प्रभावी विकल्प भी हैं।

यह व्यवसाय स्वरोजगार सृजन का सशक्त माध्यम है। बेरोजगार युवा और महिलाएँ बोनसाई निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्हें तैयार कर सकती हैं तथा स्थानीय बाजारों या ऑनलाइन माध्यमों से बिक्री कर सकती हैं। वर्तमान में अनेक युवा और महिलाएँ इस व्यवसाय को अपनाकर अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं।